2026 Volume: 02 Issue: 02 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-15

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली बनाम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन: एक तुलनात्मक अध्ययन

***Kundan Kumar Singh**

Assistant Professor, Teachers' Training College, Bhagalpur.

Article Received: 13 January 2026
Article Revised: 02 February 2026
Published on: 21 February 2026

***Corresponding Author: Kundan Kumar Singh**
Assistant Professor, Teachers' Training College, Bhagalpur.

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.8823

सारांश

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली लंबे समय से भारतीय विद्यालयों में मूल्यांकन का मुख्य आधार रही है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों की उपलब्धि का आकलन मुख्यतः अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक लिखित परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षण प्रक्रिया अधिकतर परीक्षा-केन्द्रित हो जाती है तथा विद्यार्थी रटंत पद्धति अपनाने लगते हैं। साथ ही, यह प्रणाली विद्यार्थियों के कौशल, रुचि, व्यवहार, मूल्यों और जीवन-कौशल जैसे पक्षों का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाती। इन सीमाओं को दूर करने के उद्देश्य से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation-CCE) को एक सुधारात्मक मूल्यांकन प्रणाली के रूप में विकसित किया गया। CCE का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को एक सतत प्रक्रिया बनाना है, जिसमें पूरे शैक्षणिक सत्र के दौरान विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं, कक्षा सहभागिता, मौखिक परीक्षण, गृहकार्य, अवलोकन तथा पोर्टफोलियो के माध्यम से विद्यार्थी का आकलन किया जाता है। यह प्रणाली शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को शामिल कर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन में पारंपरिक परीक्षा प्रणाली और CCE की प्रकृति, उद्देश्य, मूल्यांकन उपकरण, शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव, लाभ तथा चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक परीक्षा प्रणाली मानकीकरण और तुलनात्मक मापन में उपयोगी है, परंतु यह सीखने की प्रक्रिया में सुधार हेतु नियमित फीडबैक नहीं देती। दूसरी ओर, CCE विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सक्रिय सहभागिता और सीखने की निरंतरता को बढ़ावा देती है तथा परीक्षा तनाव को कम करती है। हालांकि, CCE के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक प्रशिक्षण, समय प्रबंधन, रिकॉर्ड-रखरखाव, संसाधनों की उपलब्धता तथा सह-शैक्षिक मूल्यांकन में व्यक्तिनिष्ठता जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समकालीन शिक्षा की

आवश्यकताओं को देखते हुए CCE अधिक प्रासंगिक है, किंतु इसे सफल बनाने हेतु व्यावहारिक सुधार, मानकीकरण तथा शिक्षकों को आवश्यक सहयोग प्रदान करना अनिवार्य है।

मुख्य शब्द : पारंपरिक परीक्षा प्रणाली, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), निर्माणात्मक मूल्यांकन, सर्वांगीण विकास, अधिगम परिणाम

1. प्रस्तावना:

मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य घटक है। यह केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने का माध्यम नहीं है, बल्कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता, शिक्षक की कार्यप्रणाली तथा विद्यार्थी की सीखने की गति और स्तर को समझने का भी एक प्रभावी साधन है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन का स्वरूप यह निर्धारित करता है कि विद्यालयों में शिक्षण किस दिशा में होगा तथा विद्यार्थी किस प्रकार सीखने की रणनीति अपनाएँगे। भारत में लंबे समय तक विद्यालयी शिक्षा में पारंपरिक परीक्षा प्रणाली प्रमुख रही है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों का मूल्यांकन मुख्यतः वार्षिक या अर्द्धवार्षिक लिखित परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता है, जिसमें अंक और ग्रेड के आधार पर सफलता निर्धारित की जाती है। यह व्यवस्था मानकीकरण एवं तुलनात्मक मापन की दृष्टि से उपयोगी रही है, परंतु समय के साथ यह स्पष्ट हुआ कि पारंपरिक परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में रटंत प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है तथा सीखने की वास्तविक समझ, कौशल विकास, रचनात्मकता, जीवन कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण जैसे पक्षों का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाती। इसके अतिरिक्त, एकल परीक्षा पर अत्यधिक निर्भरता के कारण विद्यार्थियों में तनाव, भय और प्रतियोगिता की भावना बढ़ती है।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE) को एक सुधारात्मक मूल्यांकन प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया गया। CCE का उद्देश्य मूल्यांकन को एक सतत प्रक्रिया बनाना है, जिसमें पूरे शैक्षणिक सत्र के दौरान विभिन्न गतिविधियों, परियोजना कार्य, कक्षा सहभागिता, मौखिक परीक्षण, अवलोकन, गृहकार्य तथा पोर्टफोलियो आदि के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन किया जाता है। यह प्रणाली शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में पारंपरिक परीक्षा प्रणाली तथा CCE के बीच तुलनात्मक अध्ययन करते हुए दोनों प्रणालियों की प्रकृति, उद्देश्य, मूल्यांकन उपकरण, शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव, लाभ और सीमाओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन समकालीन शिक्षा में अधिक प्रभावी, न्यायपूर्ण एवं विकासात्मक मूल्यांकन प्रणाली की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली: अवधारणा एवं विशेषताएँ:

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली वह मूल्यांकन व्यवस्था है जिसमें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आकलन मुख्यतः निर्धारित समय पर आयोजित लिखित परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता है। इस प्रणाली में सामान्यतः अर्द्धवार्षिक, वार्षिक या सत्रांत परीक्षाएँ प्रमुख होती हैं और विद्यार्थी का परिणाम प्रायः अंकों/ग्रेड के आधार पर घोषित किया जाता है। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह जानना होता है कि विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम की कितनी सामग्री याद की है और वह उसे परीक्षा में कितनी सही प्रकार से प्रस्तुत कर सकता है। इसलिए इसे अधिकतर समापनात्मक मूल्यांकन प्रणाली माना जाता है।

2.1 प्रमुख विशेषताएँ:

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) समापनात्मक प्रकृति: इस प्रणाली में मूल्यांकन प्रायः सत्र के अंत में किया जाता है। सीखने की प्रक्रिया के दौरान सुधार के अवसर सीमित होते हैं।

(2) लिखित परीक्षा का प्रभुत्व: विद्यार्थियों का मूल्यांकन मुख्यतः लिखित प्रश्नपत्र के आधार पर होता है। मौखिक, परियोजना, गतिविधि, व्यवहार या कौशल आधारित मूल्यांकन को अपेक्षाकृत कम महत्व मिलता है।

(3) अंक/ग्रेड आधारित मूल्यांकन: इस प्रणाली में विद्यार्थियों की सफलता को अंक, प्रतिशत, ग्रेड और रैंक के माध्यम से मापा जाता है, जिससे प्रतिस्पर्धा की भावना अधिक बढ़ती है।

(4) स्मरण-प्रधान सीख: पारंपरिक परीक्षा में अधिकांश प्रश्न तथ्यात्मक और स्मृति-आधारित होते हैं। इससे विद्यार्थियों में रटंत प्रवृत्ति विकसित होती है।

(5) सीमित फीडबैक: परीक्षा के बाद परिणाम घोषित होता है, परंतु सीखने में सुधार हेतु नियमित फीडबैक और सुधारात्मक शिक्षण की व्यवस्था प्रायः नहीं होती।

(6) एकल परीक्षा पर अधिक निर्भरता: पूरे सत्र की उपलब्धि का निर्णय कई बार केवल एक या दो परीक्षाओं पर आधारित होता है, जिससे मूल्यांकन की विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है।

(7) सह-शैक्षिक क्षेत्रों की उपेक्षा: इस प्रणाली में जीवन कौशल, नैतिक मूल्य, व्यवहार, नेतृत्व, खेल, कला, संप्रेषण आदि सह-शैक्षिक पक्षों का मूल्यांकन बहुत कम होता है।

(8) परीक्षा तनाव में वृद्धि: क्योंकि पूरा परिणाम मुख्य परीक्षा पर निर्भर करता है, इसलिए विद्यार्थियों में भय, तनाव और दबाव अधिक देखने को मिलता है।

2.2 पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की सीमाएँ:

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली लंबे समय तक विद्यालयी मूल्यांकन का प्रमुख आधार रही है, परंतु समकालीन शिक्षा की आवश्यकताओं के संदर्भ में इसकी कई सीमाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इस प्रणाली की प्रमुख सीमाएँ निम्नलिखित हैं

1. रटंत प्रवृत्ति को बढ़ावा: पारंपरिक परीक्षाओं में अधिकांश प्रश्न स्मरण-आधारित होते हैं। परिणामस्वरूप विद्यार्थी विषय-वस्तु को समझने की बजाय उसे याद करके लिखने पर अधिक ध्यान देते हैं। इससे सीखने की गहराई और वास्तविक समझ प्रभावित होती है।

2. सर्वांगीण विकास का अभाव: यह प्रणाली मुख्यतः केवल संज्ञानात्मक पक्ष-जैसे ज्ञान और स्मृति का मूल्यांकन करती है। जबकि भावात्मक एवं मनोदैहिक क्षेत्रों, जैसे—मूल्य, दृष्टिकोण, व्यवहार, कौशल, कला, खेल आदि का मूल्यांकन बहुत सीमित रहता है।

3. परीक्षा तनाव एवं भय में वृद्धि: क्योंकि विद्यार्थी का परिणाम एक या दो मुख्य परीक्षाओं पर निर्भर होता है, इसलिए विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, भय और दबाव अधिक बढ़ता है। कई बार यह स्थिति मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

4. नियमित फीडबैक की कमी: पारंपरिक प्रणाली में मूल्यांकन अधिकतर सत्रांत में होता है। इस कारण सीखने की प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी को समय पर फीडबैक नहीं मिल पाता, जिससे कमजोरियों को सुधारने का अवसर सीमित हो जाता है।

5. व्यक्तिगत भिन्नताओं की अनदेखी: कक्षा में सभी विद्यार्थियों की सीखने की गति और क्षमता समान नहीं होती। पारंपरिक परीक्षा प्रणाली सभी पर समान प्रकार की परीक्षा लागू करती है, जिससे धीमे सीखने वाले और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ न्याय नहीं हो पाता।

6. परीक्षा-केन्द्रित शिक्षण को बढ़ावा: पारंपरिक परीक्षा प्रणाली के कारण शिक्षण "पाठ्यक्रम समाप्ति" और "पेपर पैटर्न" तक सीमित हो जाता है। शिक्षक कई बार नवाचार, गतिविधि आधारित शिक्षण और रचनात्मक कार्यों को कम महत्व देते हैं।

3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE): अवधारणा एवं घटक:

3.1 अवधारणा

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक ऐसी मूल्यांकन प्रणाली है जिसमें विद्यार्थी के सीखने का आकलन पूरे शैक्षणिक सत्र के दौरान निरंतर किया जाता है तथा यह मूल्यांकन केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित न होकर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को भी सम्मिलित करता है। CCE का मूल उद्देश्य यह है कि मूल्यांकन को केवल परीक्षा या परिणाम तक सीमित न रखकर उसे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न

अंग बनाया जाए। यह प्रणाली विद्यार्थियों की प्रगति, कठिनाइयों और क्षमताओं की समय-समय पर पहचान करके उन्हें सुधारने के अवसर प्रदान करती है।

3.2 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रमुख घटक:

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत मूल्यांकन को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है-

(A) शैक्षिक क्षेत्र : शैक्षिक क्षेत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों के विषयगत ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण और अधिगम परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार के मूल्यांकन शामिल होते हैं-

1. निर्माणात्मक मूल्यांकन: निर्माणात्मक मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया के दौरान किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी को निरंतर फीडबैक देकर उसकी सीखने की कठिनाइयों को पहचानना और सुधार करना होता है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन के प्रमुख साधन-

- कक्षा सहभागिता
- गृहकार्य
- कक्षा-कार्य
- मौखिक प्रश्नोत्तर
- क्विज
- परियोजना कार्य
- गतिविधि आधारित कार्य
- वर्कशीट, असाइनमेंट
- पोर्टफोलियो

महत्त्व: यह मूल्यांकन विद्यार्थी को सीखने में सुधार के अवसर देता है और शिक्षक को शिक्षण रणनीति में बदलाव का मार्गदर्शन करता है।

2. समापनात्मक मूल्यांकन: समापनात्मक मूल्यांकन किसी अध्याय, यूनिट, टर्म या सत्र के अंत में किया जाता है। इसका उद्देश्य यह जानना होता है कि विद्यार्थी ने निर्धारित समय में कितना सीखा और वह सीखने के परिणामों तक कितनी सीमा तक पहुँचा।

समापनात्मक मूल्यांकन के साधन-

- टर्म परीक्षा
- यूनिट टेस्ट

- सत्रांत परीक्षा
- लिखित प्रश्नपत्र

(B) सह-शैक्षिक क्षेत्र: CCE का व्यापक पक्ष सह-शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन करता है, जिसमें विद्यार्थी के व्यक्तित्व, व्यवहार, सामाजिक विकास, नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल का आकलन किया जाता है।
सह-शैक्षिक क्षेत्र के प्रमुख आयाम-

1. जीवन कौशल
- निर्णय क्षमता
- समस्या समाधान
- आलोचनात्मक चिंतन
- संप्रेषण क्षमता

2. मूल्य एवं दृष्टिकोण
- अनुशासन
- जिम्मेदारी
- सहयोग
- सहानुभूति

3. सामाजिक गुण
- टीमवर्क
- नेतृत्व क्षमता
- सहकर्मिता

4. रुचि एवं सहभागिता
- खेलकूद
- कला, संगीत
- सांस्कृतिक गतिविधियाँ
- एन.एस.एस., स्काउट-गाइड आदि

5. व्यवहार एवं व्यक्तित्व विकास
- आत्मविश्वास
- सकारात्मक व्यवहार
- नैतिक आचरण

- मूल्यांकन उपकरण:
- अवलोकन
- चेकलिस्ट
- रेटिंग स्केल
- एनेकडोटल रिकॉर्ड

4. अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध-पत्र "पारंपरिक परीक्षा प्रणाली बनाम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE): एक तुलनात्मक अध्ययन" के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की अवधारणा, प्रकृति एवं प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की सीमाओं/कमियों का विश्लेषण करना।
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) की अवधारणा, स्वरूप एवं घटकों का अध्ययन करना।
4. CCE के उद्देश्यों एवं कार्यप्रणाली का विश्लेषण करना।
5. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली एवं CCE के बीच मुख्य अंतर को स्पष्ट करना।
6. दोनों मूल्यांकन प्रणालियों के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. CCE के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों की पहचान करना।
8. विद्यालयी मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव एवं निष्कर्ष प्रस्तुत करना।

5. तुलनात्मक अध्ययन

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन दोनों ही विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन करने की प्रणालियाँ हैं, परंतु इनका उद्देश्य, स्वरूप, प्रक्रिया और प्रभाव एक-दूसरे से काफी भिन्न है। पारंपरिक परीक्षा प्रणाली मुख्यतः सत्रांत परीक्षा और अंक-आधारित मूल्यांकन पर आधारित है, जबकि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निरंतर, बहुआयामी और विकासात्मक मूल्यांकन की अवधारणा पर आधारित है। इस खंड में दोनों प्रणालियों का विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1 उद्देश्य के आधार पर तुलना

- पारंपरिक परीक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की विषयगत जानकारी को मापना तथा उन्हें अंक/ग्रेड देकर वर्गीकृत करना है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को समझना, समय-समय पर फीडबैक देना तथा सुधारात्मक शिक्षण द्वारा अधिगम को बेहतर बनाना है।

2. मूल्यांकन की प्रकृति के आधार पर तुलना

- पारंपरिक प्रणाली समापनात्मक होती है, जिसमें परीक्षा सत्र के अंत में आयोजित की जाती है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, सतत तथा विकासात्मक होती है, जिसमें पूरे सत्र में विभिन्न चरणों पर मूल्यांकन किया जाता है।

3. मूल्यांकन के क्षेत्र के आधार पर तुलना

- पारंपरिक परीक्षा प्रणाली मुख्यतः शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित रहती है।
- CCE शैक्षिक के साथ-साथ सह-शैक्षिक क्षेत्र जैसे जीवन कौशल, व्यवहार, मूल्य, खेल, कला आदि को भी सम्मिलित करती है।

4. उपकरण एवं तकनीकों के आधार पर तुलना

पारंपरिक प्रणाली में मूल्यांकन का प्रमुख साधन लिखित प्रश्नपत्र होता है जबकि

CCE में विविध उपकरण जैसे-

- परियोजना कार्य
- मौखिक परीक्षण
- कक्षा सहभागिता
- पोर्टफोलियो
- अवलोकन, चेकलिस्ट, रूब्रिक्स
- असाइनमेंट/वर्कशीट का प्रयोग किया जाता है।

5. फीडबैक एवं सुधारात्मक शिक्षण के आधार पर तुलना

- पारंपरिक परीक्षा प्रणाली में फीडबैक बहुत सीमित होता है और सुधार का अवसर कम मिलता है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में नियमित फीडबैक दिया जाता है, जिससे विद्यार्थी अपनी कमजोरियों को पहचानकर सुधार कर सकता है।

6. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव

- पारंपरिक परीक्षा प्रणाली शिक्षण को परीक्षा-केन्द्रित बनाती है और शिक्षक "पेपर पैटर्न" पर अधिक ध्यान देते हैं।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण को बाल-केन्द्रित, गतिविधि आधारित और सीखने-केन्द्रित बनाती है।

7. विद्यार्थी पर प्रभाव

- पारंपरिक प्रणाली में विद्यार्थी अधिकतर तनाव, भय और प्रतिस्पर्धा का अनुभव करते हैं।

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है, सहभागिता बढ़ती है और परीक्षा तनाव कम होता है।

6. शिक्षण-अधिगम पर प्रभाव

मूल्यांकन प्रणाली का स्वरूप शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की दिशा और गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। पारंपरिक परीक्षा प्रणाली तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन दोनों ही शिक्षण और अधिगम को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करते हैं। इस खंड में दोनों प्रणालियों के शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

6.1 पारंपरिक परीक्षा प्रणाली का शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव:

(1) परीक्षा-केन्द्रित शिक्षण

पारंपरिक प्रणाली में शिक्षक का मुख्य लक्ष्य पाठ्यक्रम पूरा करना और विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार करना होता है। इससे शिक्षण अधिकतर पेपर पैटर्न, संभावित प्रश्न और नोट्स तक सीमित हो जाता है।

(2) रटंत अधिगम को बढ़ावा

इस प्रणाली में प्रश्न प्रायः स्मृति-आधारित होते हैं, जिससे विद्यार्थी विषय को समझने की बजाय याद करने पर अधिक ध्यान देते हैं। परिणामस्वरूप अधिगम सतही (Surface Learning) बन जाता है।

(3) सीखने की प्रक्रिया की उपेक्षा

पारंपरिक परीक्षा में परिणाम को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि विद्यार्थी ने कैसे सीखा, क्या कठिनाइयाँ आईं, किस स्तर पर समझ बनी—इन बातों पर कम ध्यान दिया जाता है।

(4) धीमे सीखने वाले विद्यार्थियों की पहचान देर से

क्योंकि मूल्यांकन सत्रांत में होता है, इसलिए कमजोर विद्यार्थियों की कठिनाइयों का पता देर से चलता है। इससे सुधारात्मक शिक्षण की संभावना कम हो जाती है।

(5) तनावपूर्ण शिक्षण वातावरण

एकल परीक्षा पर निर्भरता के कारण विद्यार्थियों में तनाव और दबाव बढ़ता है। इससे कक्षा का वातावरण कई बार भय-आधारित बन जाता है और सीखने में आनंद की कमी होती है।

6.2 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव:

(1) सीखने-केन्द्रित शिक्षण

में मूल्यांकन सीखने के साथ चलता है। इसलिए शिक्षक का ध्यान केवल परीक्षा पर नहीं बल्कि अधिगम परिणामों की प्राप्ति पर केंद्रित होता है।

(2) गतिविधि आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में परियोजना, प्रस्तुतीकरण, समूह कार्य, गतिविधियाँ, पोर्टफोलियो आदि शामिल होते हैं। इससे शिक्षण अधिक रचनात्मक, सक्रिय और अनुभवात्मक बनता है।

(3) नियमित फीडबैक और सुधारात्मक शिक्षण

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षक को विद्यार्थी की कमजोरियाँ समय पर पता चलती हैं। इसके आधार पर शिक्षक सुधारात्मक शिक्षण प्रदान कर सकता है।

(4) विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी केवल उत्तर लिखने वाला नहीं बल्कि सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनता है। इससे उसका आत्मविश्वास, संप्रेषण और सहयोग कौशल विकसित होता है।

(5) तनाव में कमी और सकारात्मक वातावरण

चूँकि मूल्यांकन निरंतर होता है और केवल एक परीक्षा पर निर्भर नहीं होता, इसलिए परीक्षा का दबाव कम होता है। इससे कक्षा का वातावरण अधिक सकारात्मक और बाल-मित्र बनता है।

(6) सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में सह-शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन भी होता है, जिससे विद्यार्थी में जीवन कौशल, मूल्य, अनुशासन, नेतृत्व आदि का विकास होता है।

7. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लाभ :

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं-

1. सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह केवल शैक्षिक उपलब्धि का ही नहीं, बल्कि विद्यार्थी के भावात्मक, सामाजिक, नैतिक और कौशलात्मक विकास का भी मूल्यांकन करता है। इससे विद्यार्थी का व्यक्तित्व अधिक संतुलित और विकसित होता है।

2. परीक्षा तनाव में कमी

पारंपरिक प्रणाली में एक या दो मुख्य परीक्षाओं पर परिणाम निर्भर होने से तनाव बढ़ता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मूल्यांकन पूरे सत्र में होता है, जिससे परीक्षा का दबाव कम होता है और विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वास के साथ सीखते हैं।

3. निरंतर फीडबैक और सुधार का अवसर

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थी की प्रगति को नियमित रूप से देखता है और समय-समय पर फीडबैक देता है। इससे विद्यार्थी अपनी कमजोरियों को पहचानकर सुधार कर सकता है तथा सीखने में निरंतर वृद्धि होती है।

4. सीखने की प्रक्रिया को मजबूत बनाना

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का लक्ष्य केवल परिणाम नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना है। यह प्रणाली विद्यार्थियों में समझ आधारित, कौशल आधारित तथा अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देती है।

5. कमजोर एवं धीमे सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए उपयोगी

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में निरंतर मूल्यांकन के कारण शिक्षक जल्दी पहचान सकता है कि कौन-से विद्यार्थी सीखने में पीछे हैं। इसके बाद सुधारात्मक शिक्षण द्वारा उनकी सहायता की जा सकती है।

6. विविध मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में केवल लिखित परीक्षा नहीं, बल्कि परियोजना, समूह कार्य, मौखिक परीक्षा, कक्षा सहभागिता, पोर्टफोलियो, अवलोकन आदि कई उपकरणों का प्रयोग होता है। इससे मूल्यांकन अधिक वास्तविक, प्रभावी और बहुआयामी बनता है।

7. जीवन कौशल एवं मूल्यों का विकास

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत जीवन कौशल, सहयोग, नेतृत्व, अनुशासन, संप्रेषण, जिम्मेदारी, नैतिक मूल्य आदि का मूल्यांकन भी किया जाता है। इससे विद्यार्थी का सामाजिक एवं नैतिक विकास संभव होता है।

8. सीखने में सक्रिय सहभागिता

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी केवल परीक्षा देने वाला नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनता है। इससे उसमें रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और आत्म-अनुशासन जैसे गुण विकसित होते हैं।

8. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन की चुनौतियाँ :

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन की प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षक प्रशिक्षण की कमी

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को निर्माणात्मक मूल्यांकन, रूब्रिक्स, चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो, अवलोकन आदि तकनीकों की समझ आवश्यक होती है। कई विद्यालयों में

शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, जिसके कारण सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का क्रियान्वयन प्रभावी नहीं हो पाता।

2. कार्यभार एवं समय प्रबंधन की समस्या

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत निरंतर मूल्यांकन, रिकॉर्ड तैयार करना, गतिविधियाँ कराना और फीडबैक देना शिक्षक के कार्यभार को बढ़ा देता है। विशेषकर बड़े विद्यालयों में समय की कमी के कारण शिक्षक सभी विद्यार्थियों का नियमित मूल्यांकन नहीं कर पाते।

3. रिकॉर्ड-रखरखाव एवं दस्तावेजीकरण

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विभिन्न प्रकार के रिकॉर्ड-रखरखाव बनाये जाते हैं जैसे-

- प्रगति रिपोर्ट
- चेकलिस्ट
- पोर्टफोलियो
- अवलोकन नोट्स
- सह-शैक्षिक मूल्यांकन

4. बड़े कक्षा आकार की समस्या

सरकारी विद्यालयों और कई निजी विद्यालयों में कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है। ऐसे में प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तिगत मूल्यांकन, फीडबैक और सुधारात्मक शिक्षण देना कठिन हो जाता है।

5. संसाधनों एवं सुविधाओं की कमी

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में गतिविधि आधारित शिक्षण और मूल्यांकन के लिए विभिन्न शिक्षण सामग्री, खेल-कूद की सुविधाएँ, कला-सामग्री, डिजिटल संसाधन आदि की आवश्यकता होती है। कई विद्यालयों में संसाधनों की कमी के कारण सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को सही ढंग से लागू करना कठिन होता है।

6. अभिभावकों में जागरूकता की कमी

कई अभिभावक आज भी परीक्षा, अंक और रैंक को ही सफलता मानते हैं। उन्हें सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया और लाभों की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। इससे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति सहयोग की कमी देखी जाती है।

7. परीक्षा-केन्द्रित मानसिकता का प्रभाव

कई शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक पारंपरिक परीक्षा प्रणाली के अभ्यस्त होते हैं। नई प्रणाली को अपनाने में मानसिक प्रतिरोध देखने को मिलता है, जिससे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रभाव कम हो जाता है।

9. सुझाव :

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और परिणामोन्मुख बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं-

1. शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के सफल क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को निर्माणात्मक मूल्यांकन, रूब्रिक्स, चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो, अवलोकन तकनीक तथा रिकॉर्ड-रखरखाव पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

2. मानकीकृत मूल्यांकन मापदंड

सह-शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन में व्यक्तिनिष्ठता कम करने के लिए विद्यालय स्तर पर स्पष्ट एवं मानकीकृत रूब्रिक्स और रेटिंग स्केल तैयार किए जाएँ।

3. रिकॉर्ड-रखरखाव को सरल बनाना

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में दस्तावेजीकरण का कार्य अधिक होता है। इसे सरल बनाने हेतु डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्कूल ERP, मोबाइल ऐप या ऑनलाइन रिकॉर्डिंग प्रणाली अपनाई जानी चाहिए।

4. कक्षा का आकार कम करना

बड़े कक्षा आकार के कारण व्यक्तिगत मूल्यांकन कठिन होता है। इसलिए शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात को सुधारने तथा कक्षा आकार को कम करने की आवश्यकता है।

5. समय प्रबंधन एवं कार्यभार का संतुलन

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षक का कार्यभार बढ़ता है। विद्यालय प्रशासन को समय-सारिणी में आवश्यक सुधार करके शिक्षकों को मूल्यांकन हेतु पर्याप्त समय उपलब्ध कराना चाहिए।

6. अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम

अभिभावकों को **सतत एवं व्यापक मूल्यांकन** की अवधारणा, लाभ तथा प्रक्रिया के बारे में जागरूक करने हेतु अभिभावक बैठक, ओरिएंटेशन कार्यक्रम और रिपोर्टिंग प्रणाली को प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

7. संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण सामग्री, खेल, कला, ICT और अन्य संसाधनों की उपलब्धता आवश्यक है। विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन एवं सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

10. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र में पारंपरिक परीक्षा प्रणाली तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक परीक्षा प्रणाली लंबे समय तक विद्यालयी मूल्यांकन का प्रमुख आधार रही है और यह मानकीकरण, तुलनात्मक मापन तथा परिणाम निर्धारण की दृष्टि से उपयोगी मानी जाती है। किंतु यह प्रणाली मुख्यतः लिखित परीक्षा, अंक और स्मरण-आधारित अधिगम पर केंद्रित होने के कारण विद्यार्थी के वास्तविक समझ, कौशल विकास, रचनात्मकता तथा सह-शैक्षिक विकास का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाती। इसके अतिरिक्त, एकल परीक्षा पर अत्यधिक निर्भरता के कारण विद्यार्थियों में तनाव, भय और प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती है, जिससे सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। दूसरी ओर, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन को एक सतत, बहुआयामी और विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है। यह प्रणाली शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को सम्मिलित कर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में निर्माणात्मक मूल्यांकन द्वारा नियमित फीडबैक, सीखने की कठिनाइयों की शीघ्र पहचान तथा सुधारात्मक शिक्षण की संभावना अधिक होती है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहभागिता, सीखने की निरंतरता और जीवन कौशल का विकास संभव होता है। हालांकि, अध्ययन में यह भी सामने आया कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, कार्यभार, समय प्रबंधन, रिकॉर्ड-रखरखाव, संसाधनों की कमी तथा सह-शैक्षिक मूल्यांकन में व्यक्तिनिष्ठता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। अतः यह आवश्यक है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को सफल बनाने हेतु शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण, मानकीकृत मूल्यांकन मापदंड, डिजिटल रिकॉर्ड प्रणाली, प्रशासनिक सहयोग तथा अभिभावक जागरूकता प्रदान की जाए।

11. संदर्भ सूची:

1. **अग्रवाल, जे. सी. (2014). शैक्षिक प्रौद्योगिकी के आवश्यक तत्व (शिक्षण-अधिगम में नवाचार). नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।**
2. **बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं काहन, जे. वी. (2012). शिक्षा में अनुसंधान (10वाँ संस्करण). नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।**

3. ब्लूम, बी. एस. (1956). शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण (टैक्सोनॉमी). न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन।
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE). (2010). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE): शिक्षक मार्गदर्शिका. नई दिल्ली: CBSE।
5. भारत सरकार. (2009). निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 (RTE). नई दिल्ली: विधि एवं न्याय मंत्रालय।
6. कुमार, आर. (2011). अनुसंधान पद्धति: शुरुआती शोधार्थियों के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका. नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।
7. मंगल, एस. के. (2012). शैक्षिक मनोविज्ञान के आवश्यक तत्व. नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।
8. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020). नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 (NCF-2005). नई दिल्ली: NCERT।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2017). प्राथमिक स्तर पर अधिगम परिणाम (Learning Outcomes). नई दिल्ली: NCERT।
11. सिंह, वाई. के. (2010). शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन. नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
12. श्रीवास्तव, एम., एवं कुमार, ए. (2015). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन: समस्याएँ एवं चुनौतियाँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 4(2), 35–40।
13. शुक्ला, आर. (2014). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन: अवधारणा एवं उपयोगिता. शोध-समीक्षा, 3(1), 45–49।
14. शर्मा, पी. (2016). विद्यालयी मूल्यांकन सुधार में CCE की भूमिका: एक विश्लेषण. शिक्षा विमर्श, 5(2), 21–26।
15. सिंह, ए., एवं वर्मा, एस. (2017). CCE के क्रियान्वयन में शिक्षकों की समस्याएँ: एक अध्ययन. भारतीय शिक्षा, 9(1), 33–39।